श्री गणेशाय नमः ''क्रिया शारीर विज्ञान'' जय महाकाल

Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

By - Dr. Narendra Singh Lodhi (MD) Mb. 9300961664, 09993961427

''आयुर्वेद''

व्युत्पत्ति :– आयुषः वेदः आयुर्वेद। (वैद्यक शब्दकोष)

निरूक्ति :– आयुरस्मिन् विद्यते अनेन् वा आयुर्विन्दति इति आयुर्वेदः। (सु. सू. 1/11)

परिभाषा :– हिताहितं सुखं दुःखम् आयुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तं आयुर्वेदः स उच्चते।। **(च.सू. 1/41)**

व्यवहारिक परिभाषा :– आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा। विद्यते यत्र विद्वभ्दिः स आयुर्वेद उच्यते। –(भाव प्रकाश)

प्रयोजन :– 1. प्रयोजनं चास्यं स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च। (च.सू. 30/26)

2. धातुसाम्यक्रिया चोक्ता तन्त्रस्यास्त्र प्रयोजनम्। (च.सू. 1/53)

3. इह खल्वायुर्वेद प्रयोजनं – व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य रक्षणञ्च। **(सु.सू. 1/22)**

अष्टांग आयुर्वेद

संहिता	1	2	3	4	5	6	7 8
चरक	काय	शालक्य	शल्य	**विषगर वै. प्रशमन**	भूतविद्या	कौमार्यभृत्य	रसायन – बाजीकरण
सुश्रुत	शल्य	शालक्य	काय	भूतविद्या	कौमार्यभृत्य	अगदतंत्र	रसायन – बाजीकरण
वाग्भट्ट	काय	बाल	**ग्रह**	**उर्ध्वांग**	शल्य	**दंष्टा**	**जरा – वृषैः।**

''आयु''

निरूक्ति :– आयु इति जीवित कालः। **आयु के पर्याय** :– धारि, जीवितम्, नित्यग, अनुबन्ध + चेतनानुवृत्ति।

परिभाषा – **'शरीरेन्द्रिय सत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरूच्यते।।' (च.सू. 1/42)**

शरीर + इन्द्रिय + सत्व + आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं।

''शरीर''

निरूक्ति :– शीर्यते तत् शरीरम्।

परिभाषा – 1. दोष धातु मल मूलं हि शरीरम्। (सुश्रुत)

2. दोष धातु मल मूलो हि दे**ह**। (अष्टांग संग्र**ह**)

3. दोष धातु मला मूल संदा देह**स्य**। (अष्टांग हृद**य**)

विशेषता :– 1. चेतनाधिष्ठान भूतम् 2. पंचममहाभूतविकार समुदायात्कम् 3. समयोगवाही।

संगठन :– 1. शक्ति रूप द्रव्य – दोष, 2. शक्ति युक्त द्रव्य – धातु, 3. शक्ति हीन द्रव्य – मल।

''दोष''

परिभाषा – 1. **दूषयन्तीति दोषाः।** (चरक) **2. दूषणात् दोषाः।** (शार्ंग्धर)।

दोष संख्या :– 1. वायुः पितं **कफ**श्चोक्तः शरीरों दोष संग्रहः। (चरक सू. 1/56)

2. वात पित्त **श्लेष्माण** एव देह सम्भव हेतवः। (सुश्रुत सू. 21/2)

3. वायु पित्तं कफश्चेति **त्रयो** दोषा समासतः। (अ. ह. सू. 1/6)

त्रिदोष	व्युत्पत्ति (सु. सू. 21)	पाच्चभौतिकता (वाग्भट्ट)	मनोगुण (शांगर्धर)
1. वात	'वा गतिगन्धनयो'	वायु +, आकाश +	रजोगुण प्रधान
2. पित्त	'तप संतापे'	अग्नि ++, जल +	सत्वगुण प्रधान
3. कफ	'श्लिष आलिंगने'	पृथ्वी +, जल ++	तमोगुण प्रधान

दोष	मुख्य स्थान	अन्य स्थान
1. वात	चरक – पक्वाशय सुश्रुत – श्रोणिगुदा वाग्भट्ट – पक्वाधान	कटि, सक्थि, पाद, अस्थि, श्रोत्र, स्पर्शनेन्द्रिय, **अस्थि–मज्जा (काश्यप)** अधोभाग (वाग्भट्ट)
2. पित्त	चरक – आमाशय सुश्रुत – पक्वामाशय मध्य **वाग्भट्ट – नाभि**	आमाशय, स्वेद, लसीका, यकृत, प्लीहा, रस, रक्तधातु, नेत्र, स्पर्शेन्द्रिय, मध्यभाग (वाग्भट्ट)
3. कफ	चरक – उरः प्रदेश सुश्रुत – आमाशय **वाग्भट्ट – सुतरामुर**	अमाशय, कण्ठ, शिरः, क्लोम, पर्व, रसधातु, मेद धातु, ध्राण, रसनेन्द्रिय उर्ध्वभाग (वाग्भट्ट)

दोष	**प्राकृत कर्म** (च. सू. 18)	**अन्य कर्म** (च. सू. 12)
1. वात	उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टा, धातुगतिसमा। समो मोक्षो गतिमतां, वायों कर्माविकारजम्।।	वायुस्तन्त्रयन्त्रधर, नियन्ता प्रणेता च मनसः सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः, सर्वशरीरव्यूहकरः।
2. पित्त	दर्शनं पक्तिरूष्मा च, क्षुत्तृष्णादेहमार्दवम्। प्रभा प्रसादो **मेधा** च पित्त कर्माविकारजम्।।	पक्ति–अपक्ति, दर्शन–अर्दशन, प्राकृत–विकृत वर्ण, शौर्य–भंय, क्रोध–हर्ष, मोह–प्रसाद आदि।
3. कफ	स्नेहो बन्धः स्थिरत्वं च, गौरव वृषताबलम्। **क्षमाधृतिर्लोभश्च** कफ कर्माविकारजम्।।	दृढ़ता–शैथिल्य, स्थूलता–कृशता, ज्ञान–अज्ञान, वृषता–क्लीवता, उत्साह–आलस्य, बुद्धि–मोह।

शरीर – वय – विभिन्न कालो से दोषों का सम्बन्ध –

दोष	**शरीर में प्रकोप सीन** (वाग्भट्ट)	वय	दिन के	रात्रि के	आहार परिपाक काल
1.वात	हृदय व नाभि के नीचे।	वृद्धावस्था	अपरान्ह	अपररात्रि	अन्त/पक्वावस्था में
2.पित्त	हृदय व नाभि के मध्य।	युवावस्था	मध्यान्ह	मध्यरात्रि	मध्य/विदग्धावस्था में
3.कफ	हृदय व नाभि के ऊपर।	बाल्यावस्थ	पूर्वान्ह	पूर्वरात्रि	आदि/आमावस्था में

आश्रयी (दोष) एवं आश्रय (धातु, मल) संबंध तथा क्षयवृद्धि का चिकित्सा सिद्धान्त :–

दोष	धातु	म्ल	वृद्धि चिकित्सा	क्षय चिकित्सा
1. वात	अस्थि	– –	वृंहण	लंघन
2. पित्त	रक्त	स्वेद	अपतर्पण	संतर्पण
3. कफ	रस, मांस, मेद, मज्जा, शुक्र	पुरीष, मूत्र	अपतर्पण	संतर्पण

दोष उनके शामक व कोपक रस :–

क्र. सं.	दोष	कोपक रस	शामक रस वरीयता सहित
1.	वात	कटु, तिक्त, कषाय	लवण, अम्ल, मधुर
2.	पित्त	कटु, अम्ल, लवण	तिक्त, मधुर, कषाय
3.	कफ	मधुर, अम्ल, लवण	कटु, तिक्त कषाय

- **दूषणात् दोषाः धारणात् धातवः मलीनिकरणात् मलाः। (शांगर्धर)**
- तरतम भेद से त्रिदोष के भेद – 63 (वाग्भट्ट, सुश्रुत, काश्यप), 62 (चरक)
- ➢ ऋग्वेद में त्रिदोष के लिए – त्रिधातु शब्द आया है।
- ➢ अथर्ववेद में ज्वर अर्थात – तक्मा के 25 भेद बतलाए गए हैं।
- ➢ अथर्ववेद में – वात = वातीकृत, पित्त = मायु, कफ = बलास।
- ➢ कामशोक भयद्वायुः क्रोधात् पित्तम् लोभात् कफम्। (माधव निदान)

"वात के गुण"

1. रूक्षः शीतो लघुः, सुक्ष्मश्चलोऽथ, विशदः खरः। (चरक– 7 गुण)

(– सूक्ष्म, चल = + दारूण → कुश ने 6 गुण बताए है।)

2. तत्र रूक्षो लघुः, शीतः खर, सूक्ष्मश्चलोऽनिलः। (वाग्भट्ट– 6 गुण) – वाग्भट्ट ने चरकोक्त 'विशद' गुण नहीं माना है।

रासायनिक गुण –

(1) **अमूर्त,** योगवाही – (चरक) (2) अव्यक्त, अचिन्त्यवीर्य, आशुकारी, व्यक्तकर्मा। (सुश्रुत)

(3) **वात के पर्याय :–** मरूत, पवन, समीरण, प्रभंजन, श्वसन, सदागति, मातरिश्वा।

वायु के पर्याय :– अव्यय, मृत्यु, यम, नियन्ता, प्रजापति, अदिति, सर्वग। (च. सू. 12)

काश्यप ने अन्न को प्रजापति कहा है।

"पित्त के गुण"

1. पित्तं सस्नेहमुष्णं तीक्ष्ण च द्रवअम्लं सरं कटु। (चरक – 7 गुण)
2. पित्तं सस्नेह तीक्ष्णोष्णं लघु, विस्त्रं सरं द्रव्यं। (वाग्भट्ट – 7 गुण)

(– कटु, अम्ल = + लघु, विस्त्रं → वाग्भट्ट)

3. औष्ण्य, तैक्ष्ण्य, रौक्ष्य, लाघव वैशद्य गुण लक्षणं पित्त। (सुश्रुत – 5 गुण)

रासायनिक गुण –

(1) विस्र (वाग्भट्ट), पूति, विशद – सुश्रुत। (2) पर्याय – वैश्वानर, वह्नि, पावक, अनल।

(3) **प्राकृतिक वर्ण** – नील या पीत वर्ण विकृत वर्ण – हरित वर्ण (सुश्रुत)।

(4) **प्राकृतिक रस** – कटु रस, **(शारंग्धर –कटु, तिक्त)** विदग्धावस्था – अम्ल रस (सुश्रुत)।

"कफ के गुण"

निरूक्ति :– 1. केन जलेन फलति इति कफः। 2. श्लेष्मा सोमः श्लेष्मल तेन सौम्यौ। (अं. ह्र. शा. 3/96)

3. श्लिष आलिंगने इति श्लेष्मा। (सु. सू 21/5)

1. गुरु शीत, मृदु स्निग्ध, मधुर स्थिर, पिच्छलाः। (चरक–7)
2. स्निग्धः शीतो गुरुः मन्दः श्लक्ष्णो मृत्स्न स्थिर कफः। (वाग्भट्ट –7)

(– मधुर, मृदु, पिच्छिला = + मन्दः, मृत्सन, श्लक्ष्ण → वाग्भट्ट)

रासायनिक गुण :–

(1) प्राकृतावस्था में रस – मधुर, विदग्धावस्था – लवण (सुश्रुत)

(2) प्राकृतावस्था में – बल (ओज) वैकृतावस्था में – मल (पाप्मा) – चरक।

वैदिक ग्रंथोक्त पांच वायु :–

1. नाग – उदगार 2. कूर्म – उन्मेष 3. कूमल – क्षुधा 4. देवदत्त – जृम्भा

5. धनंजय – सर्वव्यापी है, मरणोपरान्त भी रहती है।

- वात के 5 भेदों का सर्वप्रथम वर्णन – चरक संहिता में वातव्याधि चिकित्सा अ. 28 में है।
- पित्त के 5 भेदों का सर्वप्रथम वर्णन – सुश्रुत संहिता में व्रण प्रश्नीय सु. सू. अ. 21 में है।
- कफ के 5 भेदों का सर्वप्रथम वर्णन – अंष्टांग ह्रदय में दोषभेदीय अ. ह. सू. 12 में किया है।

5. मन का नियत्रण वायु के द्वारा होता है और मन का निग्रह स्वंय मन के द्वारा होता हैं।

चरकानुसार वायु के कार्य :–

1 **वायुस्तन्त्रयन्त्रधर,** प्राणोदानसमानव्यानापानात्मा, **प्रर्वतकश्चेष्टामुच्चावचानां, नियन्ता प्रणेता च मनसः सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः,** सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा, **सर्वशरीरव्यूहकरः,** सन्धाकरः शरीरस्य.......कर्तागर्भाकृतीनाम्, **आयुषोऽनुवृत्ति प्रत्ययभूतों भवत्य कुपितः**। (च. सू. 12) (तन्त्र – शरीर, यंत्र – शरीरायव)

2. **वातलाद्याः सदातुराः। (च.सू. 7/40)।**
3. वायुरार्युबलं वार्युवायुर्धाता शरीरिणाम्। (च. चि. 28)
4. वाताद् ऋते नास्ति रूजा। (सु सू 18)

वायु भेद	स्थान	कर्म
1 प्राण	स्थानं प्राणस्य **मूर्धोरः कण्ठ**जिह्वास्य नासिका। – (चरक)। प्राणोऽत्र **मूर्धगः उरः कण्ठ** चरो – (वाग्भट्ट)।	ष्ठीवन, क्षवथु, उदगार, श्वसन एवं आहार पान –(चरक)। **बुद्धिहृदयेन्द्रियचित्तधृक् – (अ. हृ. सू. 12/4)** बुद्धि, इन्द्रिय, हृदय, मन का धारण करना। – (वाग्भट्ट)।
2. उदान	नाभि, उर, कण्ठ में संचरण– (चरक)। उरः स्थानं उदानस्य नासानाभिगलांश्चरेत्।–(वा) **फुफ्फुस का आधार –(शा.),** पवनोत्तम – सुश्रुत	वक् प्रवृत्ति, **प्रयत्न, बल, वर्ण, ऊर्जा प्रदान करना।**(चरक) वाक्प्रवृत्ति, प्रयत्नोर्जाबलवर्ण **स्मृतिक्रियः।** – (वाग्भट्ट)। मनोविनोदानादि हिक्का, कास, उच्छवास। (भेल)
3. व्यान	देहं व्याप्नोति सर्व तु व्यानः शीघ्रगतिः नृणाम्। **समस्त शरीर – (चरक,** सुश्रुत) व्यानो हृदि स्थितः कृत्सनदेहचारी महाजवः। **हृदय – वाग्भट्ट।** कृत्सनदेहचरो व्यानः। (सुश्रुत)	गति, प्रसारण, आक्षेप, उन्मेष, निमेष आदि क्रियाऐं। जम्भाई लेना,हृदय स्पंदन, स्त्रोतों शोधन, अन्न आस्वादन। रस, रक्त का संवहन एवं स्वेद विस्रावण। – (सुश्रुत)
4. समान	**अन्तराग्नेश्च पार्श्वस्थः।** अन्तराग्नि के समीप। (चरक) समानोऽग्नि समीपस्थः कोष्ठे चरति सर्वतः।(वा.) आमपक्वाशयचरः समानो वह्निसंगतः। (सुश्रुत)	**समानोऽग्निबलप्रदः।** स्वेददोषाम्बुवाहीनि स्रोतांसि समधिष्ठितः। –(चरक) अन्नं गृह्णाति **पचति विवेचयति** मुञ्चति। – (वाग्भट्ट)। अन्नग्रहण, **पाचन**, सार–किट्ट का पृथक्करण (विवेचन)।
5. अपान	वृषण,वस्ति,मेढ्र, **नाभि, उरू,** वंक्षण,गुद – चरक। **श्रोणि,** वस्ति, मेढ्र, उरु – वाग्भट्ट।	अपानवायु, मूत्र, पुरीष, शुक्र, आर्तव व गर्भ का निष्कासन। (अपान वायु का स्थान = पक्वाधान – सुश्रुत)

पित्त भेद	स्थान	कर्म
1. पाचक	पक्वामाशय मध्य (ग्रहणी) में।– (सुश्रुत, वाग्भट्ट) **अग्नाशय में –(शांगर्धर)।**	चतुर्विधमन्नपानं **पचति विवेचयति** च दोषरसमूत्रपुरीषणिः। **पाचन,** दोष, रस, मूत्र व पुरीष का पृथक्करण।– (सुश्रुत) शेष पित्तों को स्वस्थान पर बल देना **पचत्यन्नं विभजते सारकिट्टौ पृथक् तथा। –(वाग्भट्ट)।**
2. रंजक	यकृत प्लीहा – सुश्रुत, यकृत – (शांगर्धर) **अमाशयाश्रयं** पित्तं रंजक रसरंजनात्। –(वाग्भट्ट)	रस धातु का रंजन कर रक्त निर्माण करना।
3. साधक	हृदय	बुद्धि, मेधा, अभिमान, उत्साह, प्रसन्नता।
4आलोचक	नेत्र	दर्शन।
5. भ्राजक	त्वचा	त्वचा का प्रकाशन, प्रभा, ताप नियंत्रण करना। अभ्यंग, परिषेक, आलेप आदि का पाचन।

❖ भेल के अनुसार आलोचक पित्त के 2 भेद होते हैं – 1. चक्षुवैशेषिक – चक्षु में 2. बुद्धिवैशेषिक – श्रृंगाटक में।

कफ भेद	स्थान	कर्म
1. क्लेदक	आमाशय	अन्न का क्लेदन, अन्य कफों की वृद्धि करना।
2 अवलम्बक	उरः ,(वक्षस्थल) त्रिक प्रदेश	त्रिकास्थि व हृदय का अवलम्बन।
3. बोधक	जिह्वा (चरक), जिह्वामूल, कण्ठ (सुश्रुत)	रस बोधन।
4. तर्पक	शिर	तर्पण।
5. श्लेष्मक	सन्धि	संधि संश्लेषण।

विकृत वायु जन्य रोग	–	**सुश्रुत निदान अध्याय – 1**
1. प्राण वायु	–	हिक्का, श्वास।
2. उदान वायु	–	उर्ध्वजत्रुगत रोग।
3. व्यान वायु	–	सर्व शरीर गत रोग।
4. समान वायु	–	गुल्म, मन्दाग्नि, अतिसार।
5. अपान वायु	–	गुद व बस्ति रोग, अश्मरी।

दोष धातु मल, क्षय, वृद्धि लक्षण

दोष	क्षय के लक्षण	वृद्धि के लक्षण
1.वात	मंदचेष्टता, अल्पवाक्यं, अप्रहर्ष, मूढ़ संज्ञता। – सुश्रुत।	वाकपारुष्यं, कार्श्य, कार्ष्ण्य, गात्रस्फुरण, उष्णकामिता, **निद्रानाश,** अल्पबल, गाढवर्चस्त्वं।
2.पित्त	पित्तक्षये मन्दोष्माग्निता, निष्प्रभत्व च। – सुश्रुत।	पीतावभासता, **सन्तापः,** शीतकामित्वं, **अल्पनिद्रता,** मूर्च्छा, बलहानि, इन्द्रिदौर्बल्य, पीतविण्मूत्रनेत्रता।
3.कफ	रूक्षता, **अन्र्तदाह,** आमाशय के अतिरिक्त अन्य श्लेष्माशय में शून्यता, **तृष्णा, दौर्बल्य, संधि शैथिल्य, प्रजागरण।**	शुक्लता, शैत्य, स्थिरता, गौरव, **अवसाद, अतिनिद्रा, तन्द्रा, संधिविश्लेष, अस्थिविश्लेष ।**

1.रस	घट्टते सहते, शब्दं न उच्चै, शूल्यते। **ह्रदयं ताम्यति**, स्वल्पचेष्टास्यापि रसक्षये। – चरक। रसक्षये **हृत्पीड़ा,** कम्प, शून्यता, **तृष्णा** च। – सुश्रुत। रसे रौक्ष्यं श्रमः शोषो ग्लानिः **शब्दासहिष्णुता।** – (वा.)	रसोऽतिवृद्धो **ह्रदयोंत्क्लेदं** प्रसेक च। रसोऽपि श्लेषमवत्। – (वा.)
2.रक्त	परुषा स्फ़िुटिता म्लाना त्वग् रूक्षा रक्तसंक्षये। – चरक। शोणितक्षये त्वक्पारुष्यं **अम्लशीतप्रार्थना सिराशौथिल्य।** – सु। रक्ते अम्लशिशिरप्राति शिराशैथि य रूक्षता। – (वा.)	रक्तं रक्तांगक्षितां सिरापूर्णत्वं च। – सुश्रुत। विसर्प, विद्रधि, **प्लीह,** कुष्ठ, रक्तपित्त, उपकुश, **गुल्म,** कामला, व्यंग, **अग्निनाश।** – (वा.)।
3.मांस	मांसक्षये विशेषेण स्फिग्ग्रीवोदर शुष्कता। – चरक। + रूक्षता, तोद, सदन, **धमनी शैथिल्य। – सुश्रुत।** मांसे अक्षग्लानि गण्डस्फिक्शुष्कता, **संधिवेदना** –(वा.)	स्फिग, गण्ड, ओष्ठ, मुष्क, उरू, जंघा बाहु – वृद्धि, गुरूगात्रता।
4.मेद	**संधिस्फुटन**, ग्लानि, नेत्रों में आलस्य, उदर का तनु होना। –च.। मेदःक्षये **प्लीहाभिवृद्धिः संधिशून्यता,** रौक्ष्यं, **मेदुरमांसप्रार्थना।– सु.।** मेदसि स्वपनं कट्याः **प्लीह्नो वृद्धिः** कृशागंता। – (वा.)	अंगों में स्निग्धता, उदर व पार्श्व वृद्धि, दुर्गन्ध, कास, श्वास, प्रमेह के पूर्वरूप।
5.अस्थि	**अस्थितोद,** केश,लोम,नख,श्मश्रु,द्विज–प्रपतनं, संधिशैथिल्य – चरक।	अध्यस्थि, अधिदन्त।
6.मज्जा	अस्थियां – शीर्ण, दुर्बल, लघु, **प्रततं वातरोगीणि। – चरक।** मज्जक्षये **अल्पशुक्रता,** पर्वभेद **अस्थिनिस्तोद अस्थिशून्यता।**– सु.। **अस्थिसौषिर्य,** श्रम, **तिमिरदर्शन – (अ. ह्र)। तमोदर्शन – (अ.सं.)**	**मज्जा सर्वांगनेत्रगौरवं च।** – सुश्रुत। समस्त शरीर व नेत्रों से गौरव।
7.शुक्र	शुक्रक्षये मेढ्रवृषण वेदना, मैथुनेऽशक्ति, चिर प्रसेक, शुक्रसंग रक्तप्रवृति। – सुश्रुत। **तिमिरदर्शन – (अ. सं)।** दौर्बल्यं मुखशोषश्च पाण्डुत्वं सदनं श्रमः। **क्लैव्यं** शुक्रविसर्गश्च क्षीण शुक्रस्य लक्षणम्। – चरक।	शुक्राश्मरी, अतिप्रदुर्भाव, अतिस्त्रीकामता, वृद्धं शुक्रं।

8. मूत्र	मूत्रक्षये वस्तितोद, अल्पमूत्रता च। – – सुश्रुत। मूत्रक्षये मूत्रकृच्छं मूत्रवैवर्ण्यमेव च। पिपासा **मुखं च परिशुष्यति**	वस्तितोद, मुर्हुर्मुहु प्रवृति, आध्मान।
9. पुरीष	ह्रदयपार्श्व में पीड़ा, वायु का कुक्षी में शब्द के साथ उर्ध्वगमन।	आटोप, कुक्षिशूल।
10स्वेद	**स्तब्धरोमकूपता,** त्वक्शोषः, स्पर्श वैगुण्य, स्वदेनाश च। स्वेदे **रोमच्युतिः** स्तब्धरोमता, स्फुटनं त्वचः। – **(वा.)।**	त्वक् दौर्गन्ध, कण्डू।

11 आर्तव	आर्त्तवक्षये यथोचितकालादर्शनमल्पता वा योनि वेदना च।– सु	आर्त्तवम् अंगमर्दमतिप्रवृत्तिं दौर्गन्ध्यं च।– सुश्रुत
12. स्तन	स्तनक्षये स्तनयोर्म्लानता स्तन्यासम्भवोऽल्पता वा। – सुश्रुत	स्तनयोरीपीनत्वं मुहुर्मुहुः प्रवृत्तिं तोदं च।– सुश्रुत
13. गर्भ	गर्भक्षये गर्भास्पन्दनमनुन्नतकुक्षिता च।– सुश्रुत	गर्भो जठराभिवृद्धि स्वेदं च। – सुश्रुत

- 1. निद्रानाश – वातवृद्धि 2. निद्राल्पता – पित्तवृद्धि 3. अतिनिद्रा – कफवृद्धि 4. प्रजागरण – कफक्षय।
- 1. अर्न्तदाह – कफक्षय 2. अर्न्तदाह – कफक्षय।
- 1. अग्निनाश – रक्तक्षय 2. अग्निसदन – कफवृद्धि (वा), 3. मंदाग्नि (मन्दोऽनल) – पित्तक्षय।
- 1. तृष्णा – रसक्षय, कफक्षय। 2. पिपासा – मूत्रक्षय।
- **1. हृदयोक्लेद – रस वृद्धि।** 2. **हृदय ताम्यति, हृदय पीड़ा, हृद्रद्रव – रसक्षय।**
- 1. सिराशैथिल्य – रक्तक्षय 2. धमनी शैथिल्य – मांसक्षय।
- 1. अम्लशीतप्रार्थना – रक्तक्षय 2. अम्लशिशिरप्राति – रक्तक्षय 3. **मेदुरमांसप्रार्थना**– मेदक्षय।
- 1. संधिवेदना – मांसक्षय (वा.) 2. संधिस्फुटन, संधिशून्यता – मेदक्षय।
- 1. संधिविश्लेष – कफवृद्धि 2. संधिशैथिल्य– अस्थिक्षय, (च.) कफक्षय (सु.)।
- 1. अस्थितोद – अस्थिक्षय 2. अस्थिनिस्तोद, अस्थिशौषिर्य, अस्थिशून्यता – मज्जाक्षय।
- 1. शुक्रअल्पता – मज्जाक्षय 2. सरक्त शुक्र – शुक्रक्षय 3. शुक्राश्मरी – शुक्रवृद्धि
- 1. मुखशोष – शुक्रक्षय 2. मुख परिशुष्यं – मूत्रक्षय।

" अग्नि "

चरक संहिता में अन्नि के भेदों का वर्णन – विमान स्थान अध्याय 6 **'रोगानिक विमान'** अध्याय में,
सुश्रुत संहिता में अन्नि के भेदों का वर्णन – सूत्र स्थान अध्याय 35 **'आतुरोपक्रमणीय'** अध्याय में,
अष्टांग हृदय में अन्नि के भेदों का वर्णन – सूत्र स्थान अध्याय 1 **'आयुष्कामीय'** अध्याय में किया गया है।

अग्नि के भेद :–

चरक – (13) – 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 1 पाचकाग्नि (चरक, चक्रपाणि)
सुश्रुत – (5) – पाचकाग्नि, रंजकाग्नि, साधकाग्नि, आलोचकाग्नि, भ्राजकाग्नि।
वाग्भट्ट – (23) – 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 5 पित्त (जठराग्नि) + 3 दोषाग्नि + 3 मलाग्नि। (अष्टांग संग्रह)
त्रिविध अग्नि :– 1. ज्ञानाग्नि 2. दर्शनाग्नि 3. कोष्ठाग्नि। – गर्भोपनिषद।

❖ **न खलु पित्तव्यतिरेकादन्योऽग्निरूपलभ्यते आग्नेयत्वात् पित्ते। (सु. सू. अ. 21/9)**

आचार्य सुश्रुत के अनुसार – शरीर में पित्त के अलावा और कोई अग्नि नहीं है।

दोष	**कोष्ठ–3 (चरक, वाग्भट्ट)**	**(सुश्रुत)**		**दोष**	**अग्नि**
वात	क्रूर	**क्रूर (वातकफ)**		वत	विषमाग्नि
पित्त	मृदु	मृदु		पित्त	तीक्ष्णग्नि
कफ	मध्य	–		कफ	मंदाग्नि
सर्वदोष	मध्य	मध्य		सर्व	समाग्नि

दोष	**अजीर्ण (चरक)**	**काश्यप**	**सुश्रुत**	**वाग्भट्ट**	**माधव निदान**
वात	1. विष्टब्धाजीर्ण	**1. श्लेष्माजीर्ण**	1. विष्टब्धाजीर्ण	1. विष्टब्धाजीर्ण	1. विष्टब्धाजीर्ण
पित्त	2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण
कफ	3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण
सर्वदोष	**4. सम्यकाजीर्ण**	4. रसशेषजीर्ण	4. रसशेषाजीर्ण	4. रसशेषाजीर्ण	4. रसशेषाजीर्ण
					5. दिनपाकी अजीर्ण
					6. प्राकृत अजीर्ण

अजीर्ण की चिकित्सा	**सुश्रुतानुसार**	**वाग्भट्टानुसार**	**अजीर्ण (काश्यप)**	**काश्यपानुसार**
1. विष्टब्धाजीर्ण	स्वेदन	अतिशय स्वेदन	1. श्लेष्माजीर्ण	स्वेदन
2. विदग्धाजीर्ण	वमन	वमन	2. विदग्धाजीर्ण	**प्रावृतः स्वपेत**
3. आमाजीर्ण	लंघन	लंघन	3. आमाजीर्ण	आमस्योद्धरणं पथ्यं
4. सम्यकाजीर्ण	दिवा शयन	स्वपेत् दिवा	4. रसशेषजीर्ण	**परिशोषण**

1. जठराग्नि :– पाचकाग्नि, कायग्नि, देहाग्नि, अन्ताग्नि, कोष्ठाग्नि – ये सभी जठराग्नि के पर्याय हैं।।

श्रेष्ठता :– **अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्तृणामधिपों मतः। तन्मूलास्ते हि तद् वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकाः।। (च. चि. 15)**

अन्य सभी अग्नियाँ जठराग्नि पर ही आश्रित हैं, अतः जठराग्नि सभी में श्रेष्ठ है।

महत्व :– आर्युवर्णबलं स्वास्थ्यमुत्साहोपचयौ प्रभा। ओजस्तेजोऽग्नयः प्राणाश्चोक्ता देहाग्निहेतुकाः।। (च. चि. 15)

पाचन में अग्नि क्रम – जठराग्नि ⟶ भूताग्नि ⟶ धात्वाग्नि।

2. भूताग्नि :– भौमाप्याग्नेयवायव्याः पंचोष्माणः सनाभसाः। पंचाहारगुणान् स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्ति हि।। (च. चि. 15)

- **'आहार पाचक अग्नि – जठराग्नि।'** **'आहार गुण पाचक अग्नि – भूताग्नि।'**
- द्वारकानाथ के अनुसार भूताग्नि का स्थान 'यकृत' है।

3. धात्वाग्नि :– स्वस्थानस्यस्थ कायाग्नेः अंशाधातुषु संश्रिता। तेषां सादाति दीप्तिभ्यां धातुवृद्धिक्षयोद्भवः।।

पूर्वो धातुः परं कुर्याद् वृद्धः क्षीणश्च तद्विधम्। (अं. हं. सू. 11/34)

(1) धातु व धात्वाग्नि का सम्बन्ध :–

1. धातु α 1/धात्वाग्नि अर्थात् यदि धात्वाग्नि की वृद्धि होगी तब धातुओं का क्षय होगा।

(2) जठराग्नि व धात्वाग्नि का सम्बन्ध –

2. जठराग्नि α धात्वाग्नि अर्थात् यदि जठराग्नि तीव्र होगी तब धात्वाग्नि की वृद्धि होगी।

उदा. - Hypothyrodism - Wt grain, Hyperthyrodim - Wt. Loss.

.

भस्माग्नि :– वात, पित्त वृद्ध एंव कफक्षय = भस्माग्नि। **चिकित्सा :–** माहिषी दूध (चरक) भेड़मांस (वाग्भट्ट)

"आहार पाक"

आहार पाचन क्रम का वर्णन – चरकसंहिता में चिकित्सा स्थान ग्रहणी अध्याय 15 में मिलता है।

Digestion and Metabalism in Ayurveda -- लेखक सी. द्वारकानाथ।

Concept of "Agni" in Ayurveda --- लेखक बी. भगवान दास।

<u>आहार पाक :–</u> 2 अवस्थायें है। – (A) अवस्था पाक = Digestion

(B) निष्ठा पाक = Metabalism।

(A) अवस्था पाक – (1.) प्रथमावस्था :– अविदग्धावस्था = **मधुर अवस्था पाक।**

1. अन्नस्थ भुक्तमात्रस्य षड्रसस्य प्रपाकतः। मधुराद्यात **कफो भावात फेनभूतं** उदीर्यते।। (च. चि. 15/9)

(2.) द्वितीयवस्था = विदग्धावस्था = **अम्ल अवस्था पाक।**

2. परं तु पच्यमानस्य विदग्धस्य अम्लभावतः। आशयाच्चयमानस्य **पित्तम् अच्छम् उदीर्यते।।** (च. चि. 15/10)

(3.) तृतीयावस्था = पक्वावस्था = **कदु अवस्था पाक।**

3. पक्वाशयं तु प्राप्तास्य शोष्यामाणस्य बह्निना। **परिपिण्डित पक्वस्य वायुः** स्यात् कटु भावतः।। (च. चि. 15/11)

अवस्था पाक	स्थान	दोष प्रादूर्भाव
1. मधुरावस्था	आमाशय	कफ
2. अम्लावस्था	ग्रहणी (पच्चमानाशय)	पित्त
3. पक्वास्था	पक्वाशय	वत

(B) निष्ठपाक = विपाक :– इसके अंतर्गत भूताग्नि एवं धात्वाग्नि पाक आता है।

विपाक के भेद :– 3 – (1) मधुर (2) अम्ल (3) कटुविपाक (आत्रेय सम्प्रदाय)

2 – (1) लघु विपाक (2) गुरू विपाक (धन्वतरि सम्प्रदाय)

1. आहार परिणामकर भाव = 6 :– (चरक, अष्टांग संग्रह)

1. **अग्नि** – उष्मा पचति।
2. **वायु** – वायुः अपकर्षति।
3. **स्नेह** – **स्नेहो मार्दवं जनयति।**
4. **क्लेद** – **क्लेदः शैथिल्यम् आपादयति।**
5. **काल** – कालः पर्याप्तं अभिनिर्वर्तयति।
6. **समयोग** – परिणाम धातुसाम्यकरः सम्पद्यते।

2. शरीर वृद्धिकर भाव – 4 – शरीर वृद्धिकर भाव = 4 (चरक), (17–वाग्भट्ट)

1. आहार सौष्ठव 2. काल योग 3. अविघात <u>4. स्वभाव संसिद्ध।</u>

3. बल वृद्धिकर भाव = 13 :–

1. बलि देश में जन्म।
2. बलि काल में जन्म।
3. बलि कुल में जन्म।
4. सुखकारी कालयोग।
5. बीज एंव क्षेत्र गुण सम्पन्न।
6. उत्तम आहार सेवन।
7. शरीर का प्रशस्त संगठन
8. साम्त्य सम्पत्
9. सत्व सम्पत्
10. **<u>स्वभाव संसिद्ध।</u>**
11. युवास्वथा
12. व्यायाम आदि कर्म
13. संहर्ष (प्रसन्न मन)

<u>अष्टविध आहार विशेषायतन</u>

(1) प्रकृति – **तत्र प्रकृतिरूच्यते स्वभावो**, यः स पुनराहारौषध द्रव्याणां स्वभाविको गुर्वादिः गुणयोग :।

(2) करण – **करणं पुनः स्वाभाविकानां द्रव्याणाभिसंस्कारः। संस्कारो हि गुणान्तराधानम उच्यते।।**

(3) राशि – **राशिस्तु सर्वग्रह परिग्रहौ मात्रामात्रफलविनिश्चायार्थः।** आहार द्रव्यो की मात्रा (प्रमाण) को राशि कहते है।

राशि के 2 प्रकार :– **1. सर्वग्रह** – आहार द्रव्यो की एक साथ ली जाने वाली सम्पूर्ण मात्रा।

2. परिग्रह – आहार में उपस्थित प्रत्येक घटक की पृथक पृथक मात्रा।

(4) संयोग – 'संयोग पुर्नद्वयोः बहूनां वा द्रव्याणां संहितीभावः।

(5) देश – आहार द्रव्य तथा उपभोक्ता का उत्पत्ति स्थान देश कहलाता है।

(6) काल – **कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च।** काल दो प्रकार का होता है।

1. नित्यग – नित्यगस्तु ऋतुसात्म्यापेक्षः। – नित्यग 'ऋतुसात्म्य' की अपेक्षा रखता है

2. आवस्थिक – तत्र आवस्थिको विकारमपेक्षेते। – यह 'विकार' की अपेक्षा रखता है।

(7) उपयोग संस्था – **'तत्र उपयोग नियमः स जीर्णलक्षणापेक्षः।'**

(8) उपयोक्ता – आहार का जो उपयोग करता है उसे उपयोक्ता कहते हैं **ओकसात्म्य** उपयोक्ता के अधीन रहता है।

कुक्षि के भेद :–

	(चरक –3)	(वाग्भट्ट, काश्यप – 4)
1.	1/3 भाग ठोस आहार	1/2 भाग ठोस आहार हेतु
2.	1/3 भाग द्रव आहार	1/4 भाग द्रव आहार हेतु
3.	1/3 भाग दोष संचरण हेतु	1/4 भाग – रिक्त छोडे।

आहार एवं औषध में भेद बताया – वाग्भट्ट ने, एंव औषध, भैषज में अंतर बताया – काश्यप ने।

आहार – रसप्रधान द्रव्य। (चक्रपाणि) पाचनकाल = 2 याम (वाग्भट्ट)

औषध – वीर्यप्रधान द्रव्य। (चक्रपाणि) पाचनकाल = 4 याम (वाग्भट्ट)

वर्णोत्पत्ति में सहायक महाभूत :–

चरक :– (1) अवदात (गौर) – तेल, जल, आकाश। (2) कृष्ण वर्ण – तेज, पृथ्वी, वायु।
(3) श्याम वर्ण – सर्व महाभूत समान।

सुश्रुत :– (1) गौर :– तेज + जल (2) कृष्ण :– तेज + पृथ्वी

श्यामवर्ण– 2– (3) गौर श्याम :– तेज + जल + आकाश। (4) कृष्ण श्याम :– तेज + पृथ्वी + आकाश।

"धातु – उपधातु"

निरूक्ति – धारणात् धावतः। (शांगर्धर)

परिभाषा – धारण + पोषण दोनो करे – धातु, केवल पोषण – उपधातु। (शांगर्धर) (उपधातु – गतिविवर्जितं)

धातु प्रकार – 2 भेद – (1) पोषक धातु –(सूक्ष्म अंश) (2) पोष्य धातु – (स्थूल अंश)।

रस धातु के – 2 भेद – **(1) स्थायी रस,** **(2) पोषक रस –** चक्रपाणि ने बताए है।

धातु, मल को दूष्य माना – अरूणदत। (रक्त को दोष, दूष्य माना सुश्रुत, अष्टांग, संग्रह)

❖ **आर्तव को अष्टम धातु माना है – भावमिश्र ने। ओज को अष्टम धातु माना है – चक्रपाणि ने।**

धातु	अंजलि प्रमाण	मुख्यकर्म (वाग्भट्ट)	अन्यकर्म (सुश्रुत)
1. रस	9 अंजलि	प्रीणन	तुष्टि, रक्तपुष्टि।
2. रक्त	8 अंजलि	जीवन	वर्णप्रसादन, मांसपुष्टि।
3. मांस	–	लेपन	शरीरपुष्टि मेदपुष्टि।
4. मेद	2 अंजलि	स्नेहन	स्नेहन,स्वेदन, दृढत्व्, अस्थिपुष्टि
5. अस्थि	–	धारण	मज्जापुष्टि।
6. मज्जा	1 अंजलि	पूरण	प्रीति, बल, स्नेह, शुक्रपुष्टि।
7. शुक्र	1/2 अंजलि	गर्भोत्पादन	प्रीति, देहबल, हर्ष, धैर्य, च्यवन।

➢ दोष, धातु, मलों का निश्चित (अंजलि) प्रमाण नहीं बताया है सुश्रुत ने।

धातु	महाभूत	वर्ण
1. रस	जल	श्वेत
2. रक्त	जल + अग्नि	रक्त
3. मांस	पृथ्वी + जल + अग्नि	रक्त
4. मेद	जल + पृथ्वी + अग्नि	श्वेत
5. अस्थि	पृथ्वी + आकाश	श्वेत
6. मज्जा	जल + वायु + पृथ्वी	रक्त
7. शुक्र	जल + पृथ्वी	शुक्ल

धातु	उपधातु(चरक)	शांगर्धर
1. रस	स्तन्य, आर्तव	स्तन्य
2. रक्त	कण्डरा, सिरा	आर्तव
3. मांस	वसा, त्वचा	मांस स्नेह
4. मेद	स्नायु	प्रस्वेद
5. अस्थि		दन्त
6. मज्जा		केश, रोम
7. शुक्र		'ओज'

धातु	मल (चरक)	मल (शांगर्धर)
1. रस	कफ	जिह्वा, नेत्र, कपोलगत **जल।**
2. रक्त	पित्त	रंजक पित्त।
3. मांस	खमल	कर्णमल।
4. मेद	स्वेद	जिह्वा, दन्त, मेढ्र का **मल।**
5. अस्थि	**केश, लोम**	नख (शांरगधर), **केश, लोम (वाग्भट्ट)**
6. मज्जा	नेत्र, त्वकस्नेह	नेत्रमल।
7. शुक्र	——— **(ओज – वाग्भट्ट)'**	मुखस्निग्धता, पिटिका। (श्मश्रु –डल्हण)

सुश्रुत संहिता में 'उपधातु' का वर्णन नहीं किया है किन्तु उनके कार्यो का वर्णन किया है।

रक्तलक्ष्मणम् आर्तवं गर्भकृच्च, गभो गर्भलक्षणम्। स्तन्यं स्तनयोरापीनत्वजननं जीवनं चेति।। (सु. सू. 15)

धातु पोषण काल अवधि :–

1. रस प्रत्येक धातु में 3015 कला (110 घंटा) रूकता है और 1 मास में रस से शुक्र पर्यन्त धातु बनती है।
   अतः रस –> शुक्र निर्माण में – 18090 कला (1 माह) का समय लगता है। –– (सुश्रुत)
2. रस –> शुक्र निर्माण में – 6 अहोरात्र का समय लगता है। –– (चरक)

धातु पोषण क्रम :–

न्याय	प्रवर्तक	प्र्याय
1. क्षीर दधि न्याय	दृढ़बल	सर्वात्म परिणाम पक्ष, क्रम परिणाम पक्ष
2. केदारीकुल्या न्याय	सुंश्रुत	अशांश परिणाम पक्ष।
3. खले कपोत न्याय	भाव प्रकाश	पृथक परिणाम पक्ष।
4. एककाल धातु पोषण	अरूणदत्त	एक ही समय में समस्त धातु निर्माण

मल :– मलिनीकरणान्मलाः। (शांगर्धर), मल – दूष्य माना (अरूणदत्त)।

म्ल	अंजली प्रमाण	महाभूत (वा.)	कर्म
1. पुरीष	7 अंजली	पृथ्वी + जल	**पुरीषम् उपस्तभं वाय्वग्निधारणं च। (सुश्रुत)** उपस्तंभ (सुश्रुत), अवस्तभ, उपस्तब्धः (वाग्भट्ट)
2. मूत्र	4 अंजली	जल + अग्नि	**वस्तिपूरण विक्लेदकृत मूत्रम्। (सुश्रुत)** (विक्लेदकृत – क्लेद का वहन करता है)
3. स्वेद	10 अंजली	अग्नि + जल	**स्वेदः क्लेद त्वकसौकामार्यकृत। (सुश्रुत)** (क्लेदत्वम् – क्लेद का धारण करना)

–: (1) पुरीष :–

1. **पयार्य :–** शकृत, मल, किट्ट, शमल, वर्च, **उच्चार, उपवेशन**, विष्णअवस्कर।
2. पुरीष निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – वाग्भट्ट ने किया है
3. **पुरीष की उत्पति – किट्ट सारश्च तत् पक्वम् अन्नम् संभवति द्विधा।**
   तत्र अच्छं द्विद्धम् अनस्य मूत्रं विधात घनं शकृत। (अं ह. सू. 3/16)
   अन्न के पाचन पश्चात् दो भाग बनते है प्रथम सार दूसरा किट्ट भाग। किट्ट भाग के 2 भाग हो जाते है
   (1) अच्छ (तनु) भाग से – मूत्र (2) घन भाग से– पुरीष। का निर्माण होता हैं।
4. **समान वायु का कर्म :–** पचति अन्न विभजते सारकिट्टों पृथक तथा। – सार–किट्ट का पृथक्करण करना।
5. पुरीष की उत्पत्ति – पक्वाशय में होती है, **पुरीष धराकला** – पच्चमी होती है।
5. **गुद के भेद :–** उत्तरगुदं यत्र पुरीषम अवतिष्ठते येनु तु पुरीष निष्क्रमति तत् अधर गुदम। (चक्रपाणि)

–: (2) मूत्र :–

1. **पर्याय** – मूत्र, मेह, वस्तिमल, नृजलभ, प्रस्त्राव, स्त्रव। मूत्र – किट्टम् अन्नस्य विण्मूत्रम्। (च.चि)
2. मूत्र निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – सुश्रुत ने किया है। मूत्र निर्माण प्रक्रिया – 'पक्वाशय' में शुरू होती है
   मूत्रोपत्ति – **पक्वाशसय गतास्यत्र नाड्योमूत्रवहास्तः याः। (सु. नि. अ. 321)**
3. **'मूत्र निर्माण प्रक्रिया का नियंत्रण'** – पाचक पित्त करता है।'
4. **कर्म –** 1. मूत्रस्य क्लेदवाहनम् (वा. सू. 11/5), 2. मानुष मूत्र तु विषापहम् (सु. स् 45/220),
   3. नरमूंत्र गरं हन्ति तद् विध सेवितम् रसायनम्। (भावप्रकाश)

–: (3) स्वेद :–

1. स्वेद निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – भाव प्रकाश ने किया है
2. **पर्याय** – स्वेद, धर्म, निदाघा। 3. **कर्म** – स्वेदस्य क्लेद विधृति (अ. ह. 12/5)

''प्रकृति''

1. शुक्र शोणित संयोगे यो भवेत् दोष उत्कटः। प्रकृतिः जायते तेज तस्या मे लक्षणं श्रृणुः।। (सु.शा. 4/62)

प्रकृति के प्रकार :–

दोषज प्रकृति – 7	भौतिक प्रकृति – 5 (सु. शा)	मानस प्रकृति – 16
1. वातज – हीन 2. पित्तज – मध्यम **3. कफज – उत्तम** 4. वात पित्तज – (निन्दनीय) 5. वात कफज – (निन्दनीय) 6. पित्तकफज – (निन्दनीय) **7. त्रिदोषज – (सम) श्रेष्ठ**	1. नाभस – पवित्र आचरण वाला, विशाल छिद्रोवाला, चरजीवी। 2. वायव्य – वातिक 3. आग्नेय – पैत्तिक 4. जलीय – कफज 5. पार्थिव – स्थिर, विपुल, बलवान शरीरवाला, क्षमावान।	1. सात्विक – 7 उत्तम 2. शनस – 6 मध्यम 3. तामस – 3 हीन **(काश्यप – 18)** 1. सात्विक – 8 2. राजस – 7 3. मानस – 3

शांरर्ग्धरानुसार दोषज प्रकृति केलक्षण :–

वातज प्रकृति के लक्षण	पित्तज प्रकृति के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
1. अल्प केश 2. कृशता 3. शरीर रूक्षता 4. अत्यधिक वाचाल होना 5. स्वप्न में आकाश में उड़ना	1. समय से पूर्व पालित्य 2. धीमान्, (बुद्धिमान) 3. अतिस्वेद 4. रोषण (अत्यधिक क्रोध) 5. स्वप्न में अग्नि दर्शन	1. गंभीर बुद्धि 2. स्थूल अंग 3. स्निग्ध केश 4. महाबली 5. स्वप्न में जलाशय दर्शन
अल्पकेशः कृशो रूक्षो वाचालश्चमानसः। आकाशचारीः स्वप्नेषु वातप्रकृतियो नरः।।	अकालपलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेदी च रोषणः। स्वप्नेषु ज्योतिषां द्रष्टा पित्तप्रकृतियो नरः।।	गम्भीरबुद्धिः स्थूलांगः स्निग्धकेशो महाबलः। स्वप्ने जलाशयलोकी श्लेष्मप्रकृतियो नरः।।

चरकानुसार दोषज प्रकृति के लक्षण :–

वात प्रकृति पुरूष के लक्षण	पित्तज प्रकृति पुरूष के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
बहुप्रतानकण्डरासिराप्रतानाः, शीघ्रत्रासरागविरागा, **श्रुतग्राहि, अल्पस्मृति** सततसन्धिशब्दगमिनश्च अल्पबल, अल्पायु,, अल्पधन	सुकुमारअवदात गात्रा, प्रभूत पित्लु, व्यंग, तिलपिडका, क्षिप्र वलीपलितखालित्य दोषाः, **प्रभूताशनपाना, दन्तशूका** प्रभूत सृष्ट स्वेद मूत्र पुरीषाः मध्यम–बल, आयु, ज्ञान विज्ञान	दृष्टिसुख,सुकुमारअवदातगात्रा प्रभूतशुक्रव्यवायापत्या, मन्द चेष्टाहार व्यवहार प्रसन्न स्निग्ध वर्णस्वरा, **ओजस्विनः शान्ताः, सात्विकः** सत्यसन्धः।

सुश्रुतानुसार दोषज प्रकृति के लक्षण :–

वात प्रकृति पुरूष के लक्षण	पित्तज प्रकृति पुरूष के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
प्रजागरूकः, शीतद्वेषी, दुर्भगः, स्तेनो, मत्सर्यनार्यो गान्धर्वचित्तः, स्फुटितकरचरणोऽतिरूक्षश्मश्रुनखकेशः **क्रोधी, दन्तनखखादी** च भवति, कृशपरूषो धमनीततः, **प्रलापी,** **द्रुतगति,** अटन।	स्वेदनो दुर्गन्धः, पीतशिथिलांगः, ताम्र नखतालुजिह्वौष्ठ–पाणिपादतलो, दुर्भगो, **वलीपलितखालित्य जुष्टो** उष्णद्वेषी **क्षिप्रकोपप्रसादो** मध्योबलो मध्यमायुश्च। **सदा व्यथितास्यगति मेधावीनिपुणमतिः** विगृह्य वक्ता, तेजस्वी, **दुर्निवारवीर्यः।** स्वप्न में कनक,पलाश,कर्णिकार दर्शन	शुक्लाक्षः **स्थिरकुटिलालिनीलकेशो,** लक्ष्मीवान् जलमृदंग सिंहघोषः, **रक्तान्तनेत्रः सुविभक्तगात्रः** सत्त्वगुणोपपन्न, **क्लेशक्षमो,** **दृढशास्त्रमति,** स्वप्न में– हंस, चक्रवाक, जलाशय दर्शन, **स्थिरमित्रधनः, परिनिश्चतवाक्यपदः।**

प्रकृति बाधकता :–विषजातो यथा कीटो न विषेण विपद्यते। तद्वत्प्रकृतयो मर्त्त्यं शक्नुवन्ति न बाधितुम्।। – सुश्रुत।

(2) 'मानस प्रकृति – 16' (च. शा. 4 महती गर्भावक्रान्ति)

(A) सात्विक प्रकृतियां :– (7) चरक (काश्यप –8 + प्राजापत्य सत्व)

1. बह्मकाय – शुचि, ज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनसम्पन्नं, काम–क्रोध–लोभ–मोह–मान–ईर्ष्या–हर्ष, अमर्षरहित समं सर्वभूतेषु। **(ब्राह्म सत्व सर्वोपरि – ब्राह्मत्यन्त शुद्धं व्यवस्येत्।)**
2. ऐन्द्रसत्व – ऐश्वर्यवन्तरम्, **आदेय वाक्यं, दीर्घ दर्शिनं,** धर्माथकामाभिरतम्।
3. याम्य सत्व – **लेखास्थवृतं, प्राप्तकारिणम्, असम्प्रहार्य, उत्थानवन्तं व्यपगत रागेर्ष्याद्वेषमोहं याम्यं।**
4. गार्न्धवकाय – प्रियनृत्यगीतवादि स्त्रोतपाठश्लोकारख्यकथा, इतिहासपुराण निपुण गन्धमात्या, असूयकं।
5. कौबेर सत्व – सीनमानोपभोग, **परिवार सम्पन्नं,** धर्मार्थकामनित्यं सुखविहारं, **व्यक्तकोपप्रसादं।**
6. वारूण सत्व – शूरं धीरं शुचिम् अशुद्धि द्वेषिणं, **स्थानकोप प्रसादं।**
7. आर्षसत्व – यज्ञ, अध्ययन, व्रत, होम, ब्रह्मचर्य पालन, प्रतिभा वचन विज्ञानोपधारण शक्ति सम्पन्न, उपशान्त मद–मान–राग–द्वेष–मोह–लोभ।

(B) राजस प्रकृतियां :– (6) चरक (काश्यप–7+याक्षसत्व)

1. आसुर सत्व – **शूरं चण्डम् असूयकम्** ऐश्वर्यवन्तम्।
2. राक्षस सत्व – अमर्षिणम् **अनुबन्धकोपं** छिद्रप्रहारिणं स्वप्नायास बहुलं ईर्ष्युः।
3. पिशाच सत्व – **महाशनं,** अशुचि, शुचिद्वेषिणं – भीरू भीषतिसार।
4. प्रेत सत्व – **आहारकाममति,** दुःखशीलाचारोपचारं।
5. सर्वसत्व – क्रुद्ध शूरं + अक्रुद्ध भीरू, **तीक्ष्णमायासबहुलं** सन्त्रस्तगोचरं।
6. शाकुन सत्व – **अनुषक्तकाममजस्त्रम्** आहार विहार परम्।

(C) तामस प्रकृतियां :– (3)

1. पाशव सत्व – निराकरिष्णु मेधसं, जुगुप्सित, (निन्दनीय) आचार, आहार।
2. मात्स्य सत्व – भीरूम् बुधम् आहारलुब्ध, अनवस्थितमन, सरणशीलं।
3. वानस्पत्य सत्व – अलसं **केवलमभिनिविष्टम् आहारें,** सर्वबुद्धयंगहीन।

'मानस प्रकृति – 16' (सु. शा. 4 गर्भव्याकरण)

(a) सात्विक प्रकृतियां :– (7) चरक, सुश्रुत (काश्यप – 8 + प्राजापत्य सत्व)

1. बह्मकाय – शौच, आस्तिक्य, **अभ्यासो वेदेषु,** गुरूपूजनम्, प्रियातिथि।
2. ऐन्द्र काय – माहात्म्यं, शौर्यमाज्ञा, **सततं शास्त्रबुद्धिता,** भृत्यानां भरणं।
3. याम्य काय – **प्राप्तकारी,** दृढ उत्थानं, र्निभयः, स्मृतिवान्, **शुचि,** रागमोहमदद्वेषैः वर्जिता।
4. गार्न्धवकाय – गन्धमाल्य प्रियत्वं, नित्य–वादित्र कामिता, विहारशीलता।
5. कौबेर काय – **मध्यस्तथा,** सहिष्णुत्वं, धनसंचय, स्थानमानोपभोग, **महाप्रसवशक्तित्वं।**
6. वारूण काय – शीतसेवा, **सहिष्णुत्वं, पैगल्यं** हरिकेशता, प्रियवादि।
7. ऋर्षि काय – जपव्रत ब्रह्मचर्य होम अध्ययन– सेविनम्, ज्ञानविज्ञान सम्पन्न।

(b) राजस प्रकृतियां :– (6) चरक, सुश्रुत।

1. आसुर काय – तीक्ष्णमायासिनं, भीरू, **चण्डं, मायान्वितं्।**
2. राक्षस काय – **एकान्तग्राहिता** रौद्र असूया धर्मबाह्यता।
3. पिशाच काय – उच्छिष्टाहारता, **साहसप्रियता,** स्त्रीलोलुपत्वं, नैर्लज्ज्यं।
4. प्रेत काय – असंविभागमलसं दुःखशीलमसूयकम्, लोलुपं विदुर्नरम्।
5. सर्व काय – **विचाराचारचपलं** सर्पसत्त्वं विदुर्नरम्।
6. शाकुन काय – अमर्षणोऽनवस्थायी शाकुन कायलक्षणम्।

(C) तामस प्रकृतियां :– (3)

1. पाशव काय – निराकरिष्णु, दुर्मेधस्त्वं, स्वप्ने मैथुननित्यता।
2. मात्स्य काय – भीरूत्वं, सलिलार्थिता, अनवस्थिता।
3. वानस्पत्य काय – एकस्थानरतिः नित्यमाहारे केवलं रतः, सत्त्वधर्मकामार्थवर्जितः।

"ओज"

परिभाषा :– 1. चरक – प्रथम जायते ह्ययोजः शरीरेऽस्मिन् शरीरिणाम्। (च. सू. 17)

2. सुश्रुत – रसादीनां शुक्रन्तानां धातुनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोजः तदेव बलं इत्युच्यते। (सु. सू. 15)

3. वाग्भट्ट – ओजस्तु तेजोधातुनां शुक्रान्तानां परं स्मृतम्। (अ. ह. सू. 11)

ओज सम्बन्धी मत–मतान्तर –

(1) चरक – रस, प्राकृत श्लेष्मा। **(2) ओज को अष्टम धातु माना है – चक्रपाणि ने।**

(3) अष्टांग हृदय – शुक्र का मल। (4) शांगर्धर, भावमिश्र – शुक्र की उपधातु।

ओज :– सर्पिवर्ण – मधुरस लाजागन्धि प्रजायते। च. सू. (17/75)

1. वर्ण – सर्पि (घृत) वर्ण, **2. रस** – मधु के समान, **3. गंध** – लाजा सदृश्य।

हृदयस्य ओज का स्वरूप :–

(1) चरक – रक्तमीषत्सपीतकम्। (2) सुश्रुत – शुक्लपीताभ (3) वाग्भट्ट – ईषत् लोहितपीत।

(4) काश्यप – अश्याव रक्तपीतकम्। (5) चक्रपाणि – श्वेतवर्ण। (6) डल्हण – श्वेत, तैल, क्षौद्र वर्ण।

ओज के भेद – 2 भेद होते है (चक्रपाणि)। अरूणदत्त ने पर ओज की मात्रा 6 बिन्दु बतलाई है।

(1) पर ओज – हृदय स्थित – अष्ट विन्दु प्रमाण – पित्तज स्वरूपवाला।

(2) अपर ओज – सर्वशरीर व्याप्त – 1/2 अंजलि प्रमाण – कफज स्वरूपवाला।

आचार्य डल्हण ने वर्ण के आधार पर ओज 3 भेद मानते हैं। – 1. श्वेत वर्ण 2. तैल वर्ण 3. क्षौद्र वर्ण।

ओज के 10 गुण :–

1. गुरू, शीत मृदु श्लक्षण बहल मधुरं स्थिरम्। प्रसन्न पिच्छिलं स्निग्धं ओजो दश गुण स्मृत्।। (च. चि. 24/31)
2. ओजः सोमात्मकं स्निग्धं शुक्लं शीतं स्थिरं सरम्। **विविक्तं** मृदु **मृत्स्नं** च **प्राणायतनमृत्तमम्**।। (सु. सू. 15/26)

ओज के कार्य – स्थिरोपचित्त मांसता, सर्वचेष्टा स्वप्रतिघातः, स्वरवर्ण प्रसादो बाह्ययानामाभ्यन्तराणां च करणानाम् आत्म कार्य प्रतिपत्तिः भवति।

ओज क्षय के कारण (7) अभिघात, क्षय, क्रोध, शोक, ध्यान, परिश्रम और अनशन।

ओज/बल व्यापद् – 3	**थ्स्त्रंस, व्यापत, क्षय के लक्षण**
1. विस्त्रंस	संधिविश्लेष, गात्राणां सदनं, दोष च्यवनं, क्रियासन्निरोध।
2. व्यापत	स्तब्ध गुरूंगात्रता, वातशोफ, वर्णभेद, **ग्लानि**, तन्द्रा, निद्रा।
3. क्षय	मूर्च्छा, मांसक्षय, मोह, प्रलाप, अज्ञान, मृत्यु।

"हृदय"

1. स्थान – स्तनयोः मध्याधिष्ठायोरस्याम शयद्वारं सत्वरजस्तमसामधिष्ठानं हृदय नाम मर्म।
2. **चेतनास्थान – हृदय चेतनास्थानं।** **3. पर्याय – हृदय, महत्, अर्थ।**
4. वर्णन – पुण्डरीकेण सदृशं हृदय स्याद्धोमुखम्। जाग्रतस्तत विकसति स्वपतश्च निमीलति। (सु. शा. 4/32)
5. प्रमाण – **स्वपाणि तल कुञ्चित संमिताणि।** – हृदय का प्रमाण हथेली के गड्डे के बराबर होता है।
6. आश्रय – षड्ंग, ज्ञानेन्द्रियां एवं उनके विषय, सगुण आत्मा, मन, चिन्त्य और पर ओज का आश्रय स्थान है।

–ः श्वास (श्वसनम्) :–

नाभिस्थः प्राणपवनः स्पष्टवा हत्कमलान्तरणम्। कण्ठाद् बहिर्विनिर्याति पातु विष्णुपदामृतमे।

पीत्वा चाम्बर पीयूष पुनरायाति वेगतः। प्रीणयन्देहमखिलं जीवयज्जठरानलम्। (शा. पूर्व 3/48–49)

(1) शांगर्धर ने उदान वायु को फुफ्फुस का आधार बतलाकर श्वास प्रश्वास प्रक्रिया का वर्णन किया है।

(2) शांगर्धर ने शुद्ध वायु को "**विष्णुपदामृत एवं अम्बर पीयूष**" कहा है।

(3) श्वसन प्रक्रिया प्राण, उदान, व्यान वायु, साधक पित्त एवं अवलम्बक कफ की सहायता से पूरी होती है।

(4) योग चूडामणी – मनुष्य शरीर में 1 दिन में 21,600 बार श्वसन क्रिया ।

मनुष्य शरीर प्रमाण :– 1. चरक – 84 अंगुलि पर्व। 2. सुश्रुत – 120 अंगुल। 3. वाग्भट्ट – 3½ स्वहस्त।

"तैलबिन्दु मूत्र परीक्षा – योग रत्नाकर"

योग रत्नाकर ने अष्टविध परीक्षा के अंतगर्त तैल बिन्दु मूत्र परीक्षा का वर्णन किया है। –

"नाडी मूत्रं मलं जिह्वा शब्द स्पर्शदृगाकृति"।

विधि – रात्रि के अंतिम प्रहर/सूर्योदय से पूर्व रोगी को जगाकर स्वच्छ कांच पात्र में मूत्र त्याग करावें। आदि और अंत की धार छोड़कर मध्य का मूत्र ले एंव कांच पात्र को ढककर सूर्योदय तक रख छोड़ देवें। सूर्योदय के पश्चात् घास की एक सींक तिल तैल में डूबोकर 1 बूंद तैल की मूत्र में छोड़ देंवे।

(अ) मूत्र में –

(1) तैल बिन्दु डालते ही फैल जाय – साध्य रोग
(2) न फैलकर एक स्थान पर स्थिर रहे – कष्ट साध्य रोग
(3) तैल बिन्दु मूत्र की तली में डूब जाए – असाध्य रोग

(ब) तैल बिन्दु :–

(1) पूर्व दिशा की ओर फैल जाए – शीघ्र निरोग व सुखी।
(2) पश्चिम दिशा की ओर फैल जाए – निरोगी व सुखी।
(3) उत्तर दिशा की ओर फैल जाए – निश्चित रूप से आरोग्य।
(4) दक्षिण दिशा की ओर फैल जाए – उत्तरकाल में क्रमशः निरोगी।

(5) ईशान कोण में तैल बिन्दु फैल जाए – जीवन 1 माह केवल।
(6) आग्नेय कोण में – मृत्यु निश्चित।
(7) नैऋत्य कोण में – मृत्यु निश्चित।
(8) वायव्य कोण में तैल बिन्दु फैल जाए – अमृत सेवन से भी जीवित नहीं।

(स) दोषानुसार तैल बिन्दु परीक्षा :–

दोष	तैल बिन्दु का आकार
1. वात विकार	सर्प सदृश्य
2. पित्तविकार	छत्र सदृश्य
3. कफ विकार	मुक्ताकार

❖ **मूत्र में तैल बिन्दु में छिद्र दिखे** – गतायु।
❖ **मूत्र में तैल बिन्दु चलनी सदृश्य दिखे** – कुल दोष या प्रेत दोष।
❖ **मूत्र में तैल बिन्दु की आकृति मनुष्य सदृश्य दिखे/दो मस्तिष्क दिखे** – भूत दोष।

✓ **कब चिकित्सा करें :–**

जब तैल बिन्दु की आकृति – हंस, कारण्ड पक्षी,
हाथी, चंवर,
छाता, तोरण,
कमल, तालाब, अट्टालिका आदि के सदृश्य दिखें।

X कब चिकित्सा नहीं करें :–

जब तैल बिन्दु की आकृति – कूर्म (कछुआ), सौरभ (भैंस), करण्ड मण्डल (मधुमक्खी का छत्ता)
हल, शस्त्र, खडंग, मूसल, दण्ड, बाण
शिरहीन मनुष्य, खण्ड गात्र (मानव शरीर का कटा अंग)
तिराहा या चौराहे की आदि के सदृश्य दिखें।

"नाडी परीक्षा" – (शारंग्धर पूर्व. खण्ड. अध्याय 3)

'नाडी विज्ञानम्' नामक ग्रन्थ के रचेयिता वैशेषिक दर्शनकार **महर्षि कणाद** है।
'नाडी परीक्षा' नामक ग्रन्थ के रचेयिता **रावण और गंगाधर राय** दोनों है।
आयुर्वेद ग्रन्थों में नाडी परीक्षा का सर्वप्रथम उल्लेख 'शारंग्धर संहिता' के पूर्व खण्ड के तृतीय अध्याय में मिलता है।

नाडी परीक्षा :– कस्याङ्गुष्ठमूले या धमनी जीवसांक्षिणी। तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञेयं कास्यस्य पण्डितैः।।
हाथ के अंगुठष्मूल की धमनी (**जीवसांक्षिणी**) – जीव (आत्मा) की सांक्षिणी कहलाती है।

- **नाडी का स्थान** – अंगुष्ठ मूल।
- **नाडी का पर्याय** – जीवसांक्षिणी (आत्मा की उपस्थिति की ग्वाही देने वाली)
- **नाडी से ज्ञान** – सुख (स्वास्थ्य), दुःख (विकार) का ज्ञान।

नाडी परीक्षा की विधि :–

1. नाडी परीक्षा "**प्रातःकाल**" रिक्त कोष्ठावस्था में की जाती हैं।
2. पुरूषो में – दायें हाथ की और स्त्रियों में – बांये हाथ की धमनी देखनी चाहिए।
3. हाथ की तर्जनी, मध्यमिका एवं अनामिका अंगुलियों को धमनी पर रखकर क्रमशः वात, पित्त एवं कफ दोष की परीक्षा करें।

शारंग्धरानुसार दोषानुसार नाडी की गति :–

दोष प्रकोप	नाडी की गति	उदाहरण
1. वात दोष में	सर्प, जलौका	नाडी धत्ते मारूत्कोपे जलौकासर्पयोर्गतिम्।
2. पित्त दोष में	कुलिंग, काक, मण्डूक।	कुलिंगकाकमण्डूकगति पित्तस्य कोपतः।
3. कफ दोष में	हंस, पारावत।	हंसपारावतगति धत्ते श्लेष्मस्य प्रकोपतः।
4. सन्निपातज में	लाव, तित्तर, बत्तख	लावतित्तरवर्त्तीनां गमनं सन्निपाततः।
5. द्विद्वोषज में	कभी मन्द, कभी तीव्र	कदाचिद् मंदगमना, कदाचित वेगवाहिनी।

- ❖ असाध्य नाडी – स्थानविच्युता हन्ति।
- ❖ प्राणनाशिनी नाडी – 1. स्थित्वा स्थित्वा (धीरे–धीरे) चलति, 2. अतिक्षीणा, 3. अतिशीता।

शारीरिक भाव के अनुसार नाडी की गति :–

क्रमांक	शारीरिक भाव	नाडी की गति
1.	ज्वर में	सोष्ठा, वेगवती।
2.	दीप्ताग्नि में	लघ्वी, वेगवती
3.	**काम –क्रोध में**	**वेगवहा नाडी।**
4.	**चिन्ता–भय में**	**क्षीण नाडी।**
5.	आमदोष में	गरीयसी
6.	असृग्पूर्णा	कोष्णा गुर्वी।
7.	मंदाग्नि, क्षीणधातु	मन्दतरा
8.	क्षुधित पुरूष में	चपला।
9.	तृप्त मनुष्य में	बहति स्थिरा।
10.	**स्वस्थ पुरूष में**	**स्थिरा तथा बलवती नाडी।**

—: षडक्रियाकाल :—

(सुश्रुत संहिता सूत्र स्थान अध्याय – 21 ''व्रण प्रश्नीय अध्याय'' में वर्णित)

क्रियाकाल :— षड – 6, क्रिया – चिकित्सा, काल – समय = चिकित्सा करने के छः उपयुक्त अवसर।

संचयं च प्रकोपं च प्रसरं च स्थानसंश्रयम्। व्यक्ति भेदश्च यो वेत्ति दोषाणां स भवेत् भिषक्।। (सु. सू. 21/36)

1. संचय काल – स्वस्थान में दोषों की वृद्धि।

(A) सुश्रुतानुसार दोषों के संचय के लक्षण :—

(1) वात – स्तब्ध पूर्ण कोष्ठता।
(2) पित्त – पीतावभासता, मंदोष्मता।
(3) कफ – गौरव, आलस्य, चयकारण विद्वेष।

(वाग्भट्टानुसार संचय के लक्षण :— चयो वृद्धिः स्वधाम्न्येव प्रद्वेषो वृद्धिहेतुषु। **विपरीत गुणै इच्छाः च।)**

2. प्रकोप काल – दोषों का उन्मार्गगामी होना।

(B) सुश्रुतानुसार दोषों के प्रकोप के लक्षण :—

(1) वात – कोष्ठ तोद संचरण।
(2) पित्त – अम्लिका, पिपासा, परिदाह।
(3) कफ – अन्नद्वेष, हृदयोत्क्लेश।

(वाग्भट्टानुसार प्रकोप के लक्षण :— कोपसतून्मार्गगामिता। लिंगानां दर्शनं स्वेषामस्वास्थ्यं रोगसम्भवः।)

प्रकोपक काल :—

(1) वात – स शीताभ्र प्रवातेषु **घर्मान्ते** च विशेषतः। प्रत्यूषस्य पराह्ने तु जीर्णेऽन्ने च प्रकुप्यति।।
(2) पित्त – तदुष्णैरूष्णकाले च मेघान्ते च विशेषतः। मध्याह्ने चार्द्धरात्रे च जीर्यत्यन्ने च कुप्यति।।
(3) कफ – स शीतैः शीतकाले च बसन्ते च विशेषतः। पूवाह्ने च **प्रदोषे** च भुक्तमात्रे च प्रकुप्यति।।

3. प्रसर काल – स्रोत्रो द्वारा शरीर में सर्वत्र दोषों का फैलना।

(C) सुश्रुतानुसार दोषों के प्रसर के लक्षण :—

(1) वात – विमार्गगमन आटोप।
(2) पित्त – ओष, चोष, परिदाह, धूमायन।
(3) कफ – अरोचक, अविपाक, अंगसाद, छर्दि।

(वाग्भट्टानुसार प्रकोप के लक्षण :— स्वस्थानस्थस्य समता विकारासम्भवः शमः।)

प्रसर अवस्था में. वात के द्वारा दोषों का प्रसर ''15 प्रकार'' से होता हैं।

4. स्थान संश्रय – 1. स्थानासंश्रय अवस्था में ''**दोष–दूष्य सम्मूर्च्छना**'' प्रारम्भ हो जाती हैं।
2. व्याधि के ''**पूर्वरूप**'' प्रकट हो जाते है।
3. स्थान संश्रय अवस्था में प्रथम कुपित दोषों का '**खवैगुण्य**' होता है तत्पश्चात ''**स्रोत्रो दुष्टि**'' होती है।

5. व्यक्तावस्था – 1. व्यक्तावस्था में ''**दोष–दूष्य सम्मूर्च्छना**'' पूर्ण हो जाती हैं।
2. व्याधि के ''**रूप (लक्षण)**'' प्रकट हो जाते है।

6. भेदावस्था :— 1. रोगों के दोषों की प्रधानता के आधार पर '**भेद**' स्पष्ट हो जाते है।
2. भेदावस्था में व्याधि में ''**उपद्रव**'' उत्पन्न होने लगते है।
3. उपद्रव चिकित्सा न करने पर रोग '**असाध्य**' हो जाता है।

"षडचक्र"

चक्र	स्थान	तत्व	आकार	दल	वर्ण	अक्षर	ज्ञानेन्द्रिय	कर्मेन्द्रिय	ध्यान
1. मूलाधार चक्र Pelvic Plexus	गुदा	पृथ्वी	अधोमुखं रक्तपदम्	4	रक्त	व.श. ष.स.	नासा	गुदा	विद्या आरोग्य
2. स्वाधिष्ठान चक्र Hypogestric Plexus	पेडू	जल	अरूणवर्ण पदम्	6	सिंदूरी	ब–ल	रसना	शिश्न	काव्य, योग
3. मणिपुर चक्र Coeliac Plexus	नाभि	अग्नि	पूर्णमेघ नीलकमल	10	नील	ड–फ	नेत्र	पद	विद्या, सामर्थ्य
4. अनाहत चक्र Cardiac Plexus	हृदय	वायु	कदम्ब पुष्प (गुप्त गुलाब)	12	अरूण	क–ठ	त्वक	हस्त	विवेक प्राप्ति
5. विशुद्ध चक्र	कण्ठ	आकाश	धूम धूम्र	16	धुम्र	अ–अः	कर्ण	वाक्	वक्तृत्व, ज्ञान
6. आज्ञा चक्र	भ्रूमध्य	महतत्व	आधा गुलाब आधा रंगीन	2	श्वेत	ह. क्ष	–	–	वाक्य सिद्धि

आज्ञा चक्र से ऊपर मानस चक्र, मानस चक्र से ऊपर सोम चक्र व सोम चक्र ऊपर सहस्त्रार चक्र होता है।

- ❖ षडचक्र को 'प्राचीन तन्त्र शरीर' भी कहते है।
- ❖ विशुद्ध चक्र को 'ब्रह्म द्वार' भी कहते है।
- ❖ अनाहत चक्र को 'गुप्त गुलाब' भी कहते है।

1. इडा = चन्द्र नाड़ी – वाम नासारन्ध्र से संबंधित है। **2. पिंगला = सूर्य नाड़ी** – दक्षिण नासारन्ध्र से संबंधित है।

"निद्रा"

आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य – ये त्रि उपस्तम्भ है। **त्रय उपस्तम्भा इत्याहारः स्वप्नों बह्मचर्यमिति। (च. सू. 11/33)**

निद्रा का लक्षण – अभाव प्रत्ययालम्बनावृत्तिः निद्रा। (यो. सू.) – मन के द्वारा समस्त विषयों के ग्रहण करने की क्रिया के परित्याग की वृत्ति का नाम निद्रा है। इस समय केवल आन्तरिक मन जाग्रत रहता है।

निद्रा की उत्पत्ति –'यदा तू मनसि क्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्विताः। विषयेभ्यों निवर्तन्ते तदा स्वपिति मानवः।।

मन के साथ इन्द्रियों का अपने विषयों से निवृत्त होने पर मनुष्य सोता है। (च. सू. 21)

निद्रा के भेद –

1. सुश्रुत – 3 (1) वैष्णवी (2) वैकारिकी (3) तामसी
2. चरक – 6 – तमोभवा, श्लेष्म समुदभवा, मनःशरीरश्रम सम्भवा, आगन्तुकी, व्याध्यनुर्वतनी, रात्रिस्वभाव प्रभवा।
3. वाग्भट्ट – 7 तमोभवा, कफजन्य, चित्तखेदजन्य, देहखेदजन्य, आगन्तुज, आमयजन्य, कालस्वभावजन्य।

निद्रा का समय –"रात्रौ जागरणं रूक्ष स्निग्धं प्रस्वप्नं दिवा। अरूक्ष अनभिष्यन्दि त्वासीन प्रचलायितम्।। (च. सू. 21)

दिवास्वप्न निषेध – ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्यऋतु में दिवास्वप्न से **कफपित्त** का प्रकोप होता है।(सुश्रुत – त्रिदोष)

दिवास्वप्न का विधान – दिवास्वप्नश्च तृट् शूल हिक्का जीर्णातिसारिणाम् (सु. शा. 4/47)

दिवास्वप्न जन्य विकार – **'हलीमक'** शिरःशूल, गुरूगात्रता, स्मृतिबुद्धिप्रमोह, इन्द्रिय विकार।

रात्रि जागरण हितकारी – कफ मेदो विषार्तानां राजौ जागरणं हितम्। (सु. शा. 4/42)

निद्रा नाश के कारण – 5 – **कार्य कालों विकारश्च प्रकृतिः वायुरेव च।**

(1) कार्यव्यस्तता (2) प्रतिकूल समय (3) विकारग्रस्ता (4) वृद्धावस्था (5) वातप्रकोप।

निद्रानिवारक उपाय – कायविरेचन, शिरोविरेचन, वमन, रक्तमोक्षण, व्यायाम, चिन्ता, क्रोध, धूम्रपान, असुखशय्या।

निद्राकारक उपाय – शीतल स्नान, अभ्यंग, सुखशय्या, मनोप्रिय संगीत, अत्यधिक कार्यीारता।

"आप्त वचन"

(1) आचार्य 'डल्हण'' के अनुसार ''ओज एवं साधक पित्त'' एक ही है।

(2) शांरर्ग्धर ने पाचकपित्त की मात्रा 'तिल प्रमाण' बताई है और उसका स्थान अग्नाशय बतलाया हैं।

(3) शांरर्ग्धर ने क्लोम को पिपासा का मूल कहा है।
गंगाधर ने क्लोम शब्द से फुफ्फुस व उण्डुक दोनों का ग्रहण किया है।

(4) रसाजानां विकारणां सर्वलंघनम् औषधम्। (चू. सू. 28),

(5) रसो निपाते द्रव्याणां। (च. सू. 26)

(6) अहरहर्गच्छति इति रसः। (सु. सू. 14/14)

(7) रस धातु के 2 भेद – **(1) स्थायी रस, (2) पोषक रस** – चक्रपाणि ने बताए है।

(8) रस धातु का स्थान हृदय है वहां से व्यान वायु द्वारा रस का संवहन सर्व शरीर में होतो है।
(1) शब्द सन्तान वत (2) अर्चि सन्तानवत (3) जल संतानवत।

(9) रस निमित्तमेव स्थौल्यं कार्श्य च। (सु. सू. 15/32)
सुश्रुतानुसार स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार रस पर निर्भर है।

(10) स्वप्नाहारसमुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः। (च.सू. 21/51)
चरकानुसार स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार एवं स्पप्न पर निर्भर है।

(11) रक्त धातु ही एक मात्र धातु है जो पाच्चमहाभौतिक होती है – सुश्रुत
1. विस्रता (पृथ्वी) 2. द्रवता (जल) 3. अग्नि (राग) 4. स्पंदन (वायु) **5. लघुता (आकाश)।**
1. विस्रता (पृथ्वी) 2. द्रवता (जल) 3. अग्नि (राग) 4. चलन (वायु) 5. विलय (आकाश)। – **शांरर्ग्धर।**

(12) **''रंजितास्तेजसा त्वापः शरीरस्थेन देहिनाम्। अव्यापन्नाः प्रसन्नेन रक्तमित्यभिधीयते।।''** (सु. सू. 14/5)
रक्त की परिभाषा दी है – सुश्रुत ने दी हैं।

(13) **देहस्य रूधिरं मूलं रूधिरेणैव धार्यते। (सु.सू. 14)**

(14) तद्विशुद्धं हि रूधिरं बलवर्ण सुखायुषा। युनक्ति प्राणिनं प्राणः शोणितं ह्यनुवर्ततो।। (च.सू. 24/4)
विशुद्ध रक्त का स्वरूप – चरक ने बतलाया हैं।

(15) **लोहितं प्रभवः शुद्धं तनोस्तेनैव च स्थितिः। (अ.ह.सू. 27)**

(16) वार्योविद ने – वात को, मरिच ने – पित्त को, काप्य ने – कफ को शरीर का मूल रक्षक कहा हैं।

(17) प्राण वायु एवं तर्पक कफ दोनों का कर्म – **'पूरण'** है।

(18) **'विवेक'** समान वायु का प्रकृतिस्थ गुण कहा गया है।

(19) आचार्य चरकानुसार वात के भेदो का प्रधानता क्रम – प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान।

(20) आचार्य सुश्रुत ने उदान वायु = पवनोत्तम कहा हैं।

(21) विशेषात् जीवितं प्राण उदानों बलमुच्यते। (अ ह .नि 16/56)

(22) आचार्य सुश्रुतानुसार प्राण, अपान और समान – इन तीनों प्रकार की वायुओं से जठराग्नि प्रदीप्ति होती हैं।

(23) 'कृतेऽपि अकृतसंज्ञतम्' लक्षण है – मूत्रवृद्धि का।

(24) आर्त्तव को कहा जाता है – अन्तःपुष्प।

(25) हारीत के अनुसार बुद्धि का निर्माण होता है – आकाश एंव वायु महाभूत से।

(26) **स्रोतसामेव समुदयं पुरूषमिच्छिन्ति – (च. वि. 5/4)**

(27) 'वस्ति तोद' मूत्रक्षय और मूत्रवृद्धि दोनों का लक्षण है।

(28) आचार्य वाग्भट्ट ने सामान्य निद्राकाल – 2 – 3 याम बतलाया है। (1 याम = 3 घण्टे)

(29) **शांरर्ग्धर के अनुसार शरीर हास्र क्रम –**

(1) बाल	–	10 वर्ष	(7) शुक्र	–	70 वर्ष
(2) वृद्धि	–	20 वर्ष	(8) विक्रान्त	–	80 वर्ष
(3) छवि	–	30 वर्ष	(9) बुद्धि	–	90 वर्ष
(4) मेधा	–	40 वर्ष	(10) कर्मेन्द्रिय	–	100 वर्ष
(5) त्वक	–	50 वर्ष	(11) मन	–	110 वर्ष
(6) दृष्टि	–	60 वर्ष	(12) जीवन	–	120 वर्ष।